आचार्य शाकटायन पाल्यकीर्ति

जीवन-परिचय : शाकटायन यापनीय संघ के आचार्य थे। इनका वास्तविक नाम पाल्यकीर्ति था, परन्तु शाकटायन व्याकरण के कर्ता होने के कारण शाकटायन नाम से प्रसिद्ध हो गये थे। शाकटायन को श्रुतकेवली के तुल्य बताया है।

शाकटायन पाल्यकीर्ति का समय ई. सन् 1025 के पूर्व माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य शाकटायन पाल्यकीर्ति की निम्नलिखित रचनाएँ उपलब्ध होती हैं—

1. **शब्दानुशासन अमोघवृत्तिसहित :** शाकटायन का शब्दानुशासन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें चार अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय चार पादों में विभक्त है। यह ग्रन्थ अत्यन्त प्रसिद्ध रहा है।

2. **स्त्रीमुक्तिप्रकरण :** इस ग्रन्थ में 46 कारिकाएँ हैं।

3. **केवलि-भुक्ति-प्रकरण :** इसमें 37 कारिकाएँ हैं। कारिकाएँ तार्किक शैली में लिखी गयी हैं।

इनका कोई काव्यशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थ भी रहा है, परन्तु वह आज उपलब्ध नहीं है।